वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल और पाताल) को देखा, परन्तु यह सब माया के हैं। पल में प्रलय में आने वाले हैं।

ए छल बल देखिया, धखत आग को कूप।
ए नख सिख लों देखिया, बड़ा दज्जाल का रूप।। ३९ ।।

इस माया की ताकत को देखो जो आग का ही कुंआ है और पैर से सिर तक शैतान का ही रूप है।

ताए नारायन कर सेवहीं, ऐसी ए कुफरान।
पीर जैसे मुरीद तैसे, एक रस ए निरवान।। ४० ।।

यह सारे जगत के जीव नारायण को ही परमात्मा मानकर सेवा करते हैं। 'जैसा गुरु वैसा चेला' दोनों ही सारे ब्रह्माण्ड में एक रूप से रहते हैं। इस तरह यह भ्रम का ही संसार है।

ए झूठे झूठा खेलहीं, नहीं सांच की सुध।
ए पीर मुरीद देखिए, कही दोऊ की बिध।। ४१ ।।

इस संसार के झूठे जीव झूठ में खेलते हैं। इनको सत् जो पारब्रह्म है उसकी सुध नहीं है। संसार में गुरु और चेले दोनों की हकीकत मैंने बता दी है।

।। प्रकरण ।। १७ ।। चौपाई ।। ४३६ ।।

सनन्ध–हांसी की

मोमिन यामें न रांचहीं, जाको सांचसों सनेह।
निपट ए कछुए नहीं, भी देखो नेक बिध एह।। १ ।।

हे मोमिनो! तुम्हारा सत से प्रेम है, इसलिए तुम झूठे संसार में मगन नहीं होना। निश्चित ही यह कुछ भी नहीं है। इसकी भी थोड़ी-सी हकीकत देख लो।

ए जो पीर मुरीद दोऊ कहे, कुफरान या दज्जाल।
अर्स रूहों को देखाए के, उड़ाए देसी ए ताल।। २ ।।

गुरु और चेला जो दो कहे हैं, वह दोनों ही या तो काफिर हैं या शैतान के रूप हैं। अर्श के मोमिनों को यह खेल दिखाकर ब्रह्माण्ड समाप्त कर देंगे।

ए छल ऐसा तो रच्या, जो तुम मांग्या देखन।
जिन तुम बांधो आप को, अर्स के मोमिन।। ३ ।।

यह छल का संसार इस ढंग से बना है जैसा तुमने देखना चाहा था, इसलिए अब तुम अपने आप को इस में मत बांधो, क्योंकि आप तो अर्श के मोमिन हो।

जो कोई रूहें निसबती, ए हांसी का है ठौर।
खसम वतन आप भूल के, कहा देखत हो और।। ४ ।।

जो कोई भी यहां मेरे परमधाम के साथी मोमिन हैं, वह ध्यान रखें। यह हंसी का ठिकाना है। इसमें तुम अपने आप को, घर को तथा धनी को छोड़कर और क्या देख रहे हो?

मोमिनों तुम को उपज्या, खेल देखन का ख्याल।
जाको मूल नहीं बांधे तिन, ए तो हांसी का हवाल।। ५ ।।

हे मोमिनो! तुमको खेल देखने की चाहना उत्पन्न हुई थी। जिस माया का कोई आधार ही नहीं है, उसने तुम्हें बांध रखा है। इस तरह यह हंसी का विवरण है।

Nijanand App

मांग्या खेल खुसाली का, तिन फेरे तुमारे मन।
सो सब तुमको बिसरे, जो कहे मूल वचन।। ६ ।।

खेल में आकर तुम मूल वचन जो परमधाम में कहे थे, भूल गए हो। तुमने तो खेल को खूबतर (ज्यादा अच्छा) समझकर मांगा था, परन्तु इसने तुम्हारे ईमान को ही गिरा दिया है।

गूंथो जालें दोरी बिना, आप बांधत हो अंग।
अंग बिना तलफत हो, ए ऐसे खेल के रंग।। ७ ।।

बिना डोरी के जाल की जाली गूंथ रहे हो, अर्थात् बिना आधार के कुटुम्ब-परिवार में फंस रहे हो और उसी में बिना शरीर के तड़पते हो (तुम्हारा मूल शरीर अखण्ड परमधाम में है)। यह इस तरह से माया के खेल का रंग है।

आप बंधाने आप से, इन कोहेड़े अंधेर।
चढ़्या अमल जानों जेहेर का, फिरत वाही के फेर।। ८ ।।

इस अन्धेरी धुन्ध में अपने आपको बांधते जा रहे हो। ऐसा लगता है कि तुम्हें यहां की माया का नशा चढ़ गया है और नशे के चक्कर में घूम रहे हो।

अमल चढ़या क्यों जानिए, कोई फिसलत कोई गिरत।
कोई सावचेत होए के, हाथ पकर सीढ़ी चढ़त।। ९ ।।

कैसे जाना जाए कि माया का नशा चढ़ा है? उसकी पहचान यह है कि कोई-कोई फिसलकर गिरता है, कोई सावचेत (सतर्क) होकर किसी का हाथ पकड़कर सीढ़ी चढ़ता है।

ना सीढ़ी ना पावड़ी, ए चढ़त पड़त क्यों कर।
ए देखन जैसी हांसी है, देखो मोमिनों दिल धर।। १० ।।

यहां न कोई सीढ़ी है न पांवड़ी (खड़ाऊं) है, तो गिरते-पड़ते कैसे हैं? हे मोमिनो! दिल में विचार कर देखो। यह देखने जैसा हंसी का खेल है।

एक पड़त बिना पावड़ी, वाको दूजी पकड़े कर।
सो खाए दोनों गड़थले, ए हांसी है इन पर।। ११ ।।

इसी हंसी के खेल में एक बिना पांवड़ी के गिरता है, तो दूसरा उसे पकड़कर सहारा देता है। फिर दोनों ही लड़खड़ा कर गिर जाते हैं।

एक पड़ी जिमी जान के, वाको दूजी उठावन जाए।
उलट पड़ी सो उलटी, ए हांसी यों हंसाए।। १२ ।।

एक जमीन पर गिरी हुई है, उसको दूसरी उठाती है। वह दोनों ही जमीन पर गिर पड़ती हैं। इस प्रकार की हंसी का सबको हंसाने वाला यह खेल है।

ओठा लेवे जिमी बिना, पांव बिना दौड़ी जाए।
जल बिना भवसागर, तिनमें गोते यों खाए।। १३ ।।

यहां बिना जमीन के ओटा (टेक, सहारा) लेते हैं। बिना पांव के दौड़ते हैं। बिना जल के भवसागर में गोते खाते हैं।

Nijanand App

अमलक देखो खड़ियां, हाथ बिना हथियार।
नींद बड़ी है जागते, पिंड बिना आकार।। १४ ।।

यहां अधर (बीच) में सब खड़े हैं तथा बिना हाथ के हथियार बांधे हैं। गहरी नींद में सो रहे हैं, लेकिन जागते रहे हैं। शरीर है नहीं और फिर भी शरीर मान रखे हैं, अर्थात् जिसको कुछ मान रखा है वह कुछ नहीं है। माया का ही रूप है।

एक नई कोई आवत, सो कहावत आप अबूझ।
दूजी ताए समझावने, ले बैठत सब सूझ।। १५ ।।

इसमें भी कोई नया आता है तो अनजाना कहा जाता है और दूसरा उसको समझाता है तो वह जानकार (अक्लमंद) बन जाता है।

वचन करड़े कोई कहे, किनसों सहे न जाए।
पीछे कलपे दोऊ कलकले, वाको अमल यों ले जाए।। १६ ।।

कोई कठोर वचन बोलते हैं और कई सहन नहीं कर पाते हैं। बाद में दोनों ही पछताकर रोते हैं। इस तरह के नशे का यह माया का खेल है।

लर खीज रोए रोलावहीं, दुख देखे दोऊ जन।
जागे पीछे जो देखिए, तो कमी ना मांहें किन।। १७ ।।

संसार में आपस में लड़ते हैं। गुस्सा करते हैं। रोते हैं, रुलाते हैं। दोनों दुःखी होते हैं, परन्तु यदि सावचेत (सावधान) होकर देखें तो कम कोई भी नहीं है।

हांसी होसी मोमिनों, इन खेल के रस रंग।
पूर बिना बहे जात हैं, कोई खैंच निकाले अभंग।। १८ ।।

हे मोमिनो! परमधाम में जाने के बाद इसी खेल के रस-रंगों की हांसी (हंसी) होगी। तुम बिना पूर (प्रवाह) के बहे जाते हो और तुम्हें कोई खींचकर निकालना चाहता है।

ना जल ना कछू पूर है, कौन बहे कौन आड़ी होए।
ए अमल इन जिमी का, तुमें देखावत बिध दोए।। १९ ।।

यहां न जल है न पूर (प्रवाह) है। न कोई बह रहा है, न कोई रोक रहा है। यह सब इस जमीन का नशा है जो तुम्हें दो तरह से देखने में आता है।

होसी खुसाली मोमिनों, करसी मिल कलोल।
ए हांसी या बिध की, कोई नाहीं खेल या तोल।। २० ।।

हे मोमिनो! परमधाम में जागने पर हमें बड़ी खुशी होगी तथा सब मिलकर आनन्द करेंगे। यह हांसी (हंसी) इस तरह की होगी कि इसकी बराबरी में दूसरा कोई खेल नहीं होगा।

ए खेल देखो हांसी का, आसमान लों पाताल।
फल फूल पात न दरखत, काष्ट तुचा मूल न डाल।। २१ ।।

हे मोमिनो! यह हांसी (हंसी) का खेल देखो। यहां आसमान से पाताल तक न फल है, न फूल है, न पत्ता है, न वृक्ष है, न लकड़ी, न छाल, न जड़, न डाल, कुछ भी नहीं है।

Nijanand App

ए बिरिख तो या बिध का, ताको फल चाहे सब कोए।
फेर फेर लेने दौड़हीं, ए हांसी या बिध होए।। २२ ।।

यह इस तरह का वृक्ष है जिसका फल सभी चाहते हैं और बार-बार लेने को दौड़ते हैं, जिससे हांसी (हंसी) होती है।

बंध न खुले बिना बंधे, जो खोले फेर फेर।
ए बुत कुदरत देख के, गैयां आप खसम बिसर।। २३ ।।

जब बन्धन बंधे ही नहीं तो वह खुलें कैसे? फिर भी बार-बार खोलने का प्रयत्न करते हैं। इस तरह संसार के जीवों को देखकर, हे मोमिनो! तुम अपने धनी को भूल गए हो।

अब याद करो खसम को, छोड़ो नींद विकार।
पेहेचान कराए इमामसों, सुफल करूं अवतार।। २४ ।।

अब अपने खसम (पति, स्वामी) को याद करो और माया को छोड़ो। अब मैं तुम्हारी पहचान इमाम मेंहदी से करवा देती हूं और अपना आना सार्थक करती हूं।

वतन खसम देखाए के, और अपनी असल पेहेचान।
इमाम नूर रोसन करके, उड़ाए देऊं उनमान।। २५ ।।

हे मोमिनो! तुम्हें घर (परमधाम) और धनी श्री राजजी महाराज को दिखा करके अपनी असल पहचान करा देती हूं तथा इमाम मेंहदी के ज्ञान का प्रकाश करके तुम्हारी अटकल (अनुमान) समाप्त कर देती हूं।

हकें कह्या अरवाहों उतरते, हम बैठे बीच लाहूत।
तुम अर्स भूलो आप हमको, देखो नहीं बीच नासूत।। २६ ।।

परमधाम से आते समय हक (श्री राजजी महाराज) ने अपनी आत्माओं से कहा था कि मैं परमधाम में बैठा हूं। तुम खेल में जाकर अपने घर को, अपने आप को और मुझे भूल जाओगे।

हम अर्स रूहें आसिक, हक मासूक भूलें क्यों कर।
क्या चले खेल फरेब का, तुम आगूं देत हो खबर।। २७ ।।

हम परमधाम की रूहें श्री राजजी महाराज की आशिक हैं तथा श्री राजजी महाराज हमारे माशूक हैं। भला उनको क्यों भूलेंगे? हे धाम धनी! आप पहले से ही हमें सावचेत (सावधान) कर रहे हो, तो फिर झूठा खेल हमारा क्या बिगाड़ेगा?

ए जिमी हांसी देख के, मोमिन हूजो सावचेत।
इमाम को सुख महामती, तुमको जगाए के देत।। २८ ।।

हे मोमिनो! इस हांसी (हंसी) के खेल को देखकर सावचेत (सावधान) हो जाओ। इमाम मेंहदी के सुख को मैं तुम्हें जगाकर देती हूं।

॥ प्रकरण ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ ४६४ ॥

सनन्ध–कलमें की

ए जो फरेब तुम देखिया, और देखे फरेब के मजहब।
ए तो सब तुम समझे, गुझ जाहेर करहूं अब।। १ ।।

हे मेरे मोमिनो! तुमने झूठे संसार को तथा यहां के झूठे धर्मों (मजहबों) को देखा और उनकी हकीकत तुमने समझ ली है। अब रहस्य की बातें बताती हूं।

Nijanand App